By:- Sunita Kumari
Deptt. of History
J.N. College Madhubani

B.A. History (H)
Degree- II
Paper- III
Date:- 16.05.2020

प्रश्न:- सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन पर एक निबंधात्मक लेख।
(Write an essay on the Bhakti Movement during the Sultanate Period)

उत्तर:- तुर्क अफगान के समय भारत के धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषता भक्ति-आन्दोलन का उदय था। इस काल में अनेक संतों एवं सूफियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने धर्म को आडंबरहीन करने एवं ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति जगाने का कार्य किया। इस युग के संतों ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य किए, वे थे इन्दुओं और मुसलमानों के मध्य समन्वय एवं एकता स्थापित करने का प्रयास एवं सामाजिक और धार्मिक तनाव को कम करने की चेष्टा। अपने प्रयासों में वे सफल भी हुए।

भक्ति आन्दोलन का विकास दो चरणों में हुआ। पहला चरण 7वीं से 13वीं शताब्दी तक चला, जब दक्षिण भारत में इसका आरम्भ हुआ। दूसरा चरण 13वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य विकसित हुआ। इस आन्दोलन का संबंध मुख्य रूप से हिन्दू धर्म के साथ था। उत्तरी भारत में यह आन्दोलन अपने दूसरे चरण में इस्लाम के संपर्क में आया और "इसकी चुनौतियों को स्वीकार करता हुआ इससे प्रभावित हुआ"।

भक्ति-आन्दोलन का स्वरूप:- उत्तरी भारत में भक्ति-आंदोलन का तीव्र गति से प्रसार हुआ। सत्ता के एक नए वर्ग ने "एक ओर भक्ति के आधारभूत तत्वों के बीच सामंजस्य तथा सद्भाव स्थापित किया और दूसरी ओर भारतीय रहस्यवादी धारणाओं और सूफी-साधना की रहस्यवादी धारणाओं के बीच सामंजस्य की सृष्टि की। फलस्वरूप, शीघ्र ही भक्ति-आंदोलन जन-आन्दोलन के रूप में परिणत हो गया।

classmate
Date
Page

भक्ति आन्दोलन के उद्भव प्रभाव एक निबंध :— भक्ति आन्दोलन इन संतो ने किसी नए धर्म की स्थापना नहीं, बल्कि प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर किया एवं हिन्दू-समाज के सभी वर्गों में समानता और सद्भावना स्थापित की। वे धार्मिक ग्रंथों, कर्मकांडो, यज्ञ, पूजा, बलि, तप, आदि में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि एकेश्वरवाद के समर्थक थे। वे यह मानते थे कि मनुष्य जिस प्रकार अपने आत्मीय जनों से प्रेम करता है, उसी प्रकार का प्रेम वह ईश्वर से भी कर सकता है, जिसके अनेक रूप है। भक्ति की चरम सीमा में उसका ईश्वर-प्रेम उसी प्रकार का हो जाता है, जिस प्रकार प्रेमी और प्रेमिका का। दोनों के मध्य अन्य किसी की गुंजाइश नहीं रहती है। भक्ति मार्ग में गुरु का अधिक महत्व था। गुरु भक्ति-मार्ग दिखलानेवाला होता है। धार्मिक संतों ने दोहों, कविताओं एवं गीतों के माध्यम से अपना संदेश जनसाधारण तक पहुँचाया।

— भक्ति-आन्दोलन की उत्पत्ति के कारण :—

भक्ति आन्दोलन की उत्पत्ति के निम्नलिखित कारण थे :—

1. भक्ति मार्ग की सरलता :— डॉ॰ यूसुफ हुसैन के अनुसार "ब्राह्मणवाद मूल रूप से एक बौद्धिक सिद्धांत बन कर रह गया था। वह हृदय के अधिकारी की उपेक्षा करता था। मौलिक सिद्धांत जिनको वह "वाद" शिक्षा देते थे। अवैयक्तिक एवं काल्पनिक थे। वे उन लोगों की समझ में नहीं आते थे जो सदैव एक नैतिकतायुक्त सिद्धांत एवं धर्म की खोज में थे तथा जिसके द्वारा हृदय को संतुष्टि तथा नैतिक शिक्षण सम्भव न हो।" दूसरे शब्दों में, हिन्दु-धर्म का

classmate
Date
Page

5: समन्वय की भावना :— बहुत समय तक हिन्दू तथा मुसलमान एक साथ रहे थे। इससे पूर्व दोनों जातियों एक-दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष तथा वैमनस्य का परिचय देती थी। इन दोनों जातियों ने आपस में सद्भाव का जन्म आवश्यक समझा। अतः इसी भावना से भक्ति मार्ग के आन्दोलन को बढ़ावा मिला।

6:- भक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेता :- Important Leaders of the Bhakti Movement) :— भक्ति आन्दोलन को सबल बनाने में दक्षिण एवं उत्तरी भारत के अनेक संतों ने योगदान किया। इसका आरम्भ 11-12 वीं शताब्दी में वैष्णवों ने किया। इन लोगों ने भक्तिवाद को सैद्धांतिक स्वरूप प्रदान किया। भक्ति आन्दोलन के नेताओं में रामानुज, माधवाचार्य, विष्णुस्वामी, निम्बार्क, बल्लभाचार्य, रामानंद, चैतन्य, कबीर, नानक, इत्यादि प्रमुख हैं।

भक्ति की दो शाखाएँ :— भक्ति आन्दोलन की दो प्रमुख धाराएँ थी :— निर्गुण और सगुण परंपरा। निर्गुणवादी निराकार प्रभु की सर्वोच्चता में विश्वास रखते थे परन्तु सगुण परंपरावासे राम या कृष्ण को अपना आराध्यदेव मानते थे। निर्गुण संत उपनिषद् की विचारधाराओं से प्रभावित थे परन्तु सगुण संत अवतारवाद की कल्पना से। निर्गुण संतों ने बाह्य साधना पर अधिक बल दिया जबकि सगुण संतों ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, कीर्तन-उपासना को प्रोत्साहन दिया। निर्गुण संत अपने विचार में अधिक प्रगतिशील थे। इनलोगों ने ईश्वर की एकता के आधार पर हिन्दुओं-मुसलमानों में एकता और समानता स्थापित करने का प्रयास किया। निर्गुण भक्ति आन्दोलन का उदय ब्राह्मणों के जातिगत एवं कर्मकांड पर विश्वास थी

classmate
Date
Page

आंदोलन पर इस्लाम का प्रभाव :— इस्लाम से भक्ति आन्दोलन किस हद तक प्रभावित हुआ। इस पर विभिन्न इतिहासकारों की अपनी-अपनी मान्यताएँ है। प्रो० ए० एल० श्रीवास्तव का विचार है कि सल्तनत काल में सुल्तानों ने हिन्दुओं के प्रति जो धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनायी, मंदिरों का विनाश किया। इसके कारण हिन्दू धर्म में एक नई विचारधारा ने जन्म लिया। अब वाह्य धार्मिक आडम्बरों के स्थान पर (मंदिर, मूर्ति, पूजा, यज्ञ इत्यादि) ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम प्रकट करने की भावना का उदय हुआ।

जन-आन्दोलन के रूप में भक्ति आन्दोलन :— भक्ति मार्ग भारतीय धर्म और दर्शन के लिए नया नहीं था। इसकी झलक उपनिषदों में भी पाई जाती है। वस्तुस्थिति यह है कि 13वीं शताब्दी तक भारतीय धर्म और समाज पतन की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। यह सांस्कृतिक-धार्मिक संकट का काल था। इसे बचाने के लिए इसमें सुधार की आवश्यकता थी।

भक्ति-आन्दोलन का प्रभाव :— जिस प्रकार छठी शताब्दी ई० पू० में हुए धर्मसुधार-आन्दोलन ने भारत में एक धार्मिक और सामाजिक क्रांति ला दी थी। उसी प्रकार मध्यकालीन भारतीय भक्ति आन्दोलन ने प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देकर नए दर्शन की व्यवस्था कर समाज और धर्म में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। फलस्वरूप, मूर्तिपूजा, धार्मिक आडंबरों, ब्राह्मणों के प्रभुत्व और बहुदेववाद के स्थान पर निर्गुण एवं सगुण ब्रह्म की भक्ति को बल मिला।